

बीमारियों के नियंत्रण के जीएम दावे के खतरे

भारत डोगरा

पहले तो विवाद जेनेटिक रूप से परिवर्तित (जीएम) फसलों पर हो रहा था। अब एक नया विवाद जीएम मच्छर के रूप में सामने आया है। कुछ वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उन्होंने ऐसे जीएम मच्छर विकसित किए हैं जो डेंगू फैलाने वाले मच्छरों को कम



करने में मदद करेंगे। इस तकनीक के बारे में दावा किया गया है कि इससे मच्छर जल्दी ही मर जाएगा। यह भी कहा जा रहा है कि आगे चलकर इसी तकनीक से मलेरिया नियंत्रण में भी मदद मिल सकती है। इसके लिए मच्छर की जेनेटिक बनावट को इस तरह बदला जाएगा कि वह ज़्यादा नर मच्छरों को ही जन्म दे। इस तकनीक में कई खतरे छिपे हैं जिनकी ओर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है।

सबसे पहले तो यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि यह तकनीक कोई बहुत नई तकनीक नहीं है। आज से लगभग चार दशक पहले भी जेनेटिक नियंत्रण की एक परियोजना बहुत विवाद का विषय बनी थी। इस प्रोजेक्ट का नाम था जेनेटिक कंट्रोल ऑफ़ मॉस्किटोज़ (मच्छरों का जेनेटिक नियंत्रण)। इसे संक्षेप में जी.सी.एम.यू. प्रोजेक्ट कहा गया था।

जी.सी.एम.यू. के बारे में एक बड़ी आलोचना उस समय यह हुई थी कि इस विदेशी सहयोग से चल रहे प्रोजेक्ट की आड़ में ऐसी जानकारी एकत्र की जा रही थी जो जैविक हथियारों के विकास में मददगार हो सकती थी।

ऐसी कुछ अन्य परियोजनाओं की चर्चा उस समय ज़ोरों पर थी। भारतीय संसद की लोक लेखा समिति की वर्ष 1975 की 167वीं रिपोर्ट में इस बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई थी व इस तरह की संभावना वाली कई परियोजनाओं

का विश्लेषण किया गया था। बाद में इसकी फॉलो-अप रिपोर्ट भी वर्ष 1976 में तैयार हुई थी।

इन रिपोर्टों में जिन परियोजनाओं की आलोचना की गई थी उनमें जी.सी.एम.यू. परियोजना भी थी। इस पर टिप्पणी करते

हुए न्यू साइंटिस्ट पत्रिका में प्रकाशित एक लेख में कहा गया था कि यदि कोई भारत पर पीत ज्वर फैलाने का हमला करना चाहे तो इस परियोजना में एकत्रित जानकारी बहुत उपयोगी होगी।

अतः जीएम मच्छरों पर कोई भी निर्णय लेने से पहले सरकार के नीति निर्धारकों को चाहिए कि वे संसदीय समितियों की इन रिपोर्टों का ध्यान से अध्ययन कर लें।

विश्व के अनेक प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के मंच इंडिपेंडेंट साइंस पैनल ने जेनेटिक इंजीनियरिंग के खतरों के प्रति चेतावनी देते हुए एक दस्तावेज़ जारी किया था जिसमें उन्होंने कहा है कि जेनेटिक इंजीनियरिंग में जिन तौर-तरीकों व सामग्रियों का उपयोग किया जा रहा है उन्हीं का उपयोग जैव-हथियार बनाने में भी होता है। अतः सावधानी ज़रूरी है।

जेनेटिक इंजीनियरिंग तकनीक से जो खतरे मूल रूप से जुड़े हैं, उन्हें ध्यान में रखना ज़रूरी है। जानी-मानी वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर सूसन बारडो ने कहा है कि 'अब तक की सब तकनीकें ऐसी थीं जो नियंत्रित हो सकती थीं। पर मानव इतिहास में जीएम ऐसी पहली तकनीक है जिससे खतरा उत्पन्न हो गया तो इस क्षति को रोका नहीं जा सकता है और उसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती है। जब एक जीएम ऑर्गेनिज़्म या जीएमओ को पर्यावरण में छोड़ दिया जाता है

तो वह नियंत्रण से बाहर हो जाता है, हमारे पास उसे लौटा लाने का कोई उपाय नहीं है। इसके मनुष्य व अन्य जीवों के स्वास्थ्य पर बहुत गंभीर परिणाम हो सकते हैं।’

जेनेटिक इंजीनियरिंग तकनीक से अनेक तरह के अनिश्चय जुड़े हैं और कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि केवल अपेक्षित अच्छे परिणाम ही प्राप्त होंगे व अनपेक्षित अनेक बुरे परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। तीन वैज्ञानिकों वान हो, हार्टमट मेयर व जो कमिन्स ने जेनेटिक इंजीनियरिंग की विफलताओं की पोल खोलते हुए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ *इकोलाजिस्ट* पत्रिका में प्रकाशित किया है। इस दस्तावेज़ के अनुसार बहुचर्चित चमत्कारी सूअर या *सुपरपिग*, जिसके लिए मनुष्य की वृद्धि के हार्मोन प्राप्त किए गए थे बुरी तरह फ्लॉप हो चुका है। इस तरह जो सूअर वास्तव में तैयार हुआ उसको अल्सर थे, वह जोड़ों के दर्द से पीड़ित था,

अंधा था और नपुसंक था। इसी तरह, तेज़ी से बढ़ने वाली मछलियों के जीन्स प्राप्त कर जो *सुपरसाल्मन* मछली तैयार की गई थी उसका सिर बहुत बड़ा था, और वह न तो ठीक से देख सकती थी, न सांस ले सकती थी, न भोजन ग्रहण कर सकती थी और इसी कारण शीघ्र ही मर जाती थी। बहुचर्चित भेड़ डॉली के जो क्लोन तैयार हुए वे असामान्य थे व सामान्य भेड़ के बच्चों की तुलना में जन्म के समय उनकी मृत्यु की संभावना आठ गुना अधिक पाई गई।

मूल बात यह है कि किसी अनिश्चित व अनियंत्रित तकनीक से प्रकृति से खिलवाड़ करना उचित नहीं है। इस तरह की अनिश्चित तकनीकों पर भरोसा करने के स्थान पर जन स्वास्थ्य के उन जाने-माने तौर-तरीकों की ओर ध्यान देना चाहिए जो मलेरिया और डेंगू जैसी मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए ज़रूरी हैं। (*स्रोत फीचर्स*)